नील आर्मस्ट्रांग

नील आर्मस्ट्रांग

अनीता

विषयवस्तु

आप क्या करते हैं?

आपका जन्म कहां हुआ था?

आप स्कूल में कैसे थे?

जब आपने उड़ना शुरू किया तो आप कितने साल के थे?

आप एक अंतरिक्ष यात्री कैसे बने?

आप चंद्रमा पर कैसे पहुंचे?

आपने चंद्रमा पर कब कदम रखा?

आपने चंद्रमा पर क्या किया?

आप कितने समय तक अंतरिक्ष में रहे?

जब आप पृथ्वी पर वापस आए तब क्या हुआ?

क्या आप फिर कभी अंतरिक्ष में गए?

सैटर्न - 5

कुछ महत्वपूर्ण तिथियां

आप क्या करते हैं?

"मैं एक अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री और पायलट हूं."

20 जुलाई, 1969 को अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग, चंद्रमा पर पैर रखने वाले दुनिया के पहले व्यक्ति बने. दुनिया में लाखों टीवी दर्शकों ने उन्हें तब देखा जब आर्मस्ट्रांग ने चंद्र मॉड्यूल से बाहर निकलकर चंद्रमा की सतह पर अपना पहला कदम रखा.
"वो एक आदमी के लिए एक छोटा कदम है," उन्होंने कहा,
"लेकिन मानव जाति के लिए वो एक विशाल छलांग है."

1957 में, रूस ने पहला मानव निर्मित उपग्रह, स्पुतनिक-1 अंतरिक्ष में भेजा. 1961 में, सोवियत कॉस्मोनॉट यूरी गगारिन अंतरिक्ष में जाने वाले पहले व्यक्ति बने. उसके बाद रूस और अमेरिकी में "स्पेस रेस" शुरू हुई. अमरीका ने वर्चस्व हासिल करने का फैसला लिया. मई 1961 में, राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी ने घोषणा की कि अमेरिका 1970 तक चंद्रमा पर एक आदमी को लैंड कराएगा.

चंद्रमा तक पहुँचने के लिए अपोलो-11 मिशन अब तक की सबसे रोमांचक यात्राओं में से एक थी. उसमें बहुत जोखिम भी था. किसी को नहीं पता था कि अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर क्या मिलेगा, या फिर वो कभी सुरक्षित वापस लौट पाएंगे.

आपका जन्म कहां हुआ था?

"मैं अपने दादा-दादी के फार्म पैदा हुआ था,
जो ओहियो के वैपकॉनेटा के पास था."

नील एल्डेन आर्मस्ट्रांग का जन्म 5 अगस्त 1930 को ओहियो के वैपकॉनेटा शहर के बाहर उनके दादा-दादी के फार्म पर हुआ था. उनके माता-पिता का नाम स्टीफन और वायोला आर्मस्ट्रांग था. नील की एक छोटी बहन, जून और एक छोटा भाई, डीन था.

स्टीफन आर्मस्ट्रांग, ओहियो राज्य के लिए एक अकाउंटेंट के रूप में काम करते थे. नौकरी की वजह से परिवार को अक्सर घर शिफ्ट करना पड़ता था.

नील को बहुत कम उम्र से ही उड़ान में दिलचस्पी थी. जब वह सिर्फ दो साल का था, तो उसके माता-पिता उसे क्लीवलैंड म्यूनिसिपल एयरपोर्ट पर ले गए. वहां उसने हवाई जहाजों को टेक-ऑफ और लैंड करते हुए देखा. वो विमानों से इतना मोहित हुआ कि वो वहां से घर वापिस नहीं जाना चाहता था.

नील को अपनी पहली हवाई जहाज उड़ान के लिए चार साल इंतजार करना पड़ा. एक रविवार की सुबह, उसे एक पायलट ने हवाई जहाज़ की सवारी दी. वो पायलट शहर में स्थानीय लोगों को विमान की सवारी देने आया था.

आप स्कूल में कैसे थे?

"मैंने स्कूल में हमेशा कड़ी मेहनत की और मैं अच्छा प्रदर्शन करना चाहता था."

नील स्कूल जाने से पहले से ही पढ़ना सीख गया था. स्कूल में, वह एक बहुत ही तेज़ छात्र था. नील को स्कूल जाने में और अपने दोस्तों के साथ फुटबॉल खेलने में मज़ा आता था. वो स्काउट भी बना.

लेकिन कुछ ऐसा भी था, जिसमें उसे और ज़्यादा मज़ा आता था - मॉडल हवाई-जहाज बनाने में.

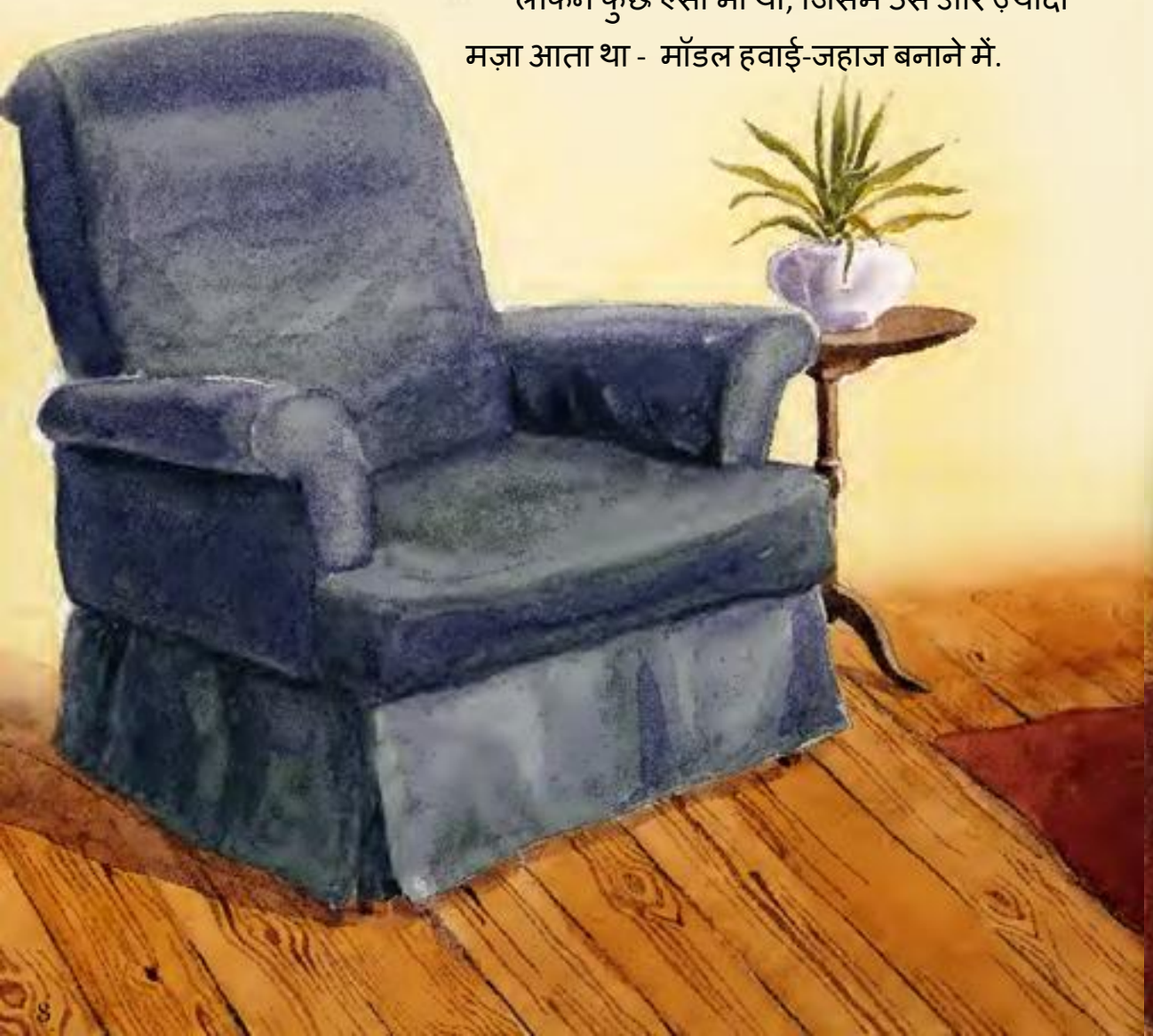

नील ने जब अपना पहला मॉडल प्लेन बनाया तब वो आठ साल का था. जल्द ही वो अगले मॉडल प्लेन पर मेहनत करने लगा. दस साल की उम्र में, नील को स्थानीय कब्रिस्तान में घास काटने का पहला काम मिला. उस कमाई से वो बड़े मॉडल विमान खरीदना चाहता था. बाद में, उसने एक बेकरी में काम किया. उन पैसों से उसने बैरीटोन नाम का एक वाद्ययंत्र खरीदा जो उसने स्कूल बैंड में बजाया.

हाई स्कूल में, नील ने कड़ी मेहनत की, खासकर विज्ञान और गणित में. नेता बनने की उसमें प्राकृतिक क्षमता थी. अक्सर अन्य छात्र उसके पास मदद के लिए आते थे. नील ने स्कूल के बैंड में खेलना जारी रखा. स्कूल बैंड और विभिन्न नौकरियां करना थकान भरा था लेकिन नील ने उसकी कोई परवाह नहीं की. उन सब पैसों से वो उड़ान कोर्स की फीस जमा कर सकता था!

जब आपने उड़ना शुरू किया तो आप कितने साल के थे?

"जब मैंने पायलट की परीक्षा पास की तब मैं 16 साल का था."

अगस्त 5,1946 को, नील ने पायलट का लाइसेंस अर्जित किया. तब वो सोलह साल का था. उसके लिए उड़ना एक सपने के सच होने जैसा था, लेकिन नील यह भी समझना चाहता था कि विमान कैसे काम करते थे. हाई स्कूल के बाद, वो एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग पढ़ने के लिए पर्ड्यू यूनिवर्सिटी गया..

डेढ़ साल बाद, नौसेना की ओर से उसने कोरियाई युद्ध में एक लड़ाकू पायलट के रूप में प्रशिक्षण लिया. 20 साल की उम्र में, वो अपनी स्क्वाड्रन में सबसे कम उम्र के पायलट था

नील का उड़ान कौशल और बहादुरी उच्च स्तर की थी. एक बार, जब दुश्मन की गोलियों से उसके जेट में आग लगी तो वो जहाज़ से कूदकर बच गया.

1952 में, नील अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए पर्ड्यू यूनिवर्सिटी लौटा. तीन साल बाद, उसने एक टेस्ट-पायलट के रूप में एक नए विमान का परीक्षण किया. वो नया विमान एक्स -15 रॉकेट विमान था. वो किसी भी अन्य विमान की तुलना में तेजी से और उच्च उड़ान भर सकता था. वो किसी अंतरिक्ष यान के लिए अभी तक सबसे तेज़ था.

आप एक अंतरिक्ष यात्री कैसे बने?

"मुझे नासा ने जेमिनी-8 मिशन के लिए चुना."

1960 के दशक में, जेमिनी परियोजना के नाम से जानी जाने वाली अंतरिक्ष उड़ानों की एक श्रृंखला शुरू हुई. नील ने अंतरिक्ष यात्री बनने के लिए आवेदन किया और उसे चुन लिया गया. 1966 में उनकी पहली उड़ान जेमिनी-8 पर थी, जो अंतरिक्ष में एक अन्य रॉकेट के साथ पहली बार सफलतापूर्वक जुड़ा. शुरू में चीजें सुचारू रूप से चलीं. फिर एक थ्रस्टर फेल हो गया और जेमिनी-8 ने नियंत्रण से बाहर स्पिन करना शुरू किया. नील उसे स्थिर करने और आपदा से बचने में कामयाब रहा. लेकिन वो बहुत खराब घड़ी थी.

तेज़ सोच और कौशल के लिए नील की खूब प्रशंसा की गई. जब नासा ने अपोलो उड़ानों के लिए चालक दल की घोषणा की, तो उन्हें चंद्रमा पर उतरने वाले पहले मिशन अपोलो-11 का कमांडर नियुक्त किया गया. चालक दल के अन्य सदस्य थे - एडविन बज़ एल्ड्रिन और माइकल कोलिन्स.

अंतरिक्ष यात्रियों ने कठिन प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया. उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से खुदको सबसे अच्छी स्थिति में लाना था - और मिशन के हर बारीकी को सीखना था. आपातकाल स्थिति में उन्हें क्या करना है यह भी उन्हें समझना था. नील को मिशन का कोई डर नहीं था, लेकिन उन्होंने कहा, "पूरी ईमानदारी से मैं चंद्रमा से वापस आने वाला पहला आदमी बनना चाहता हूँ."

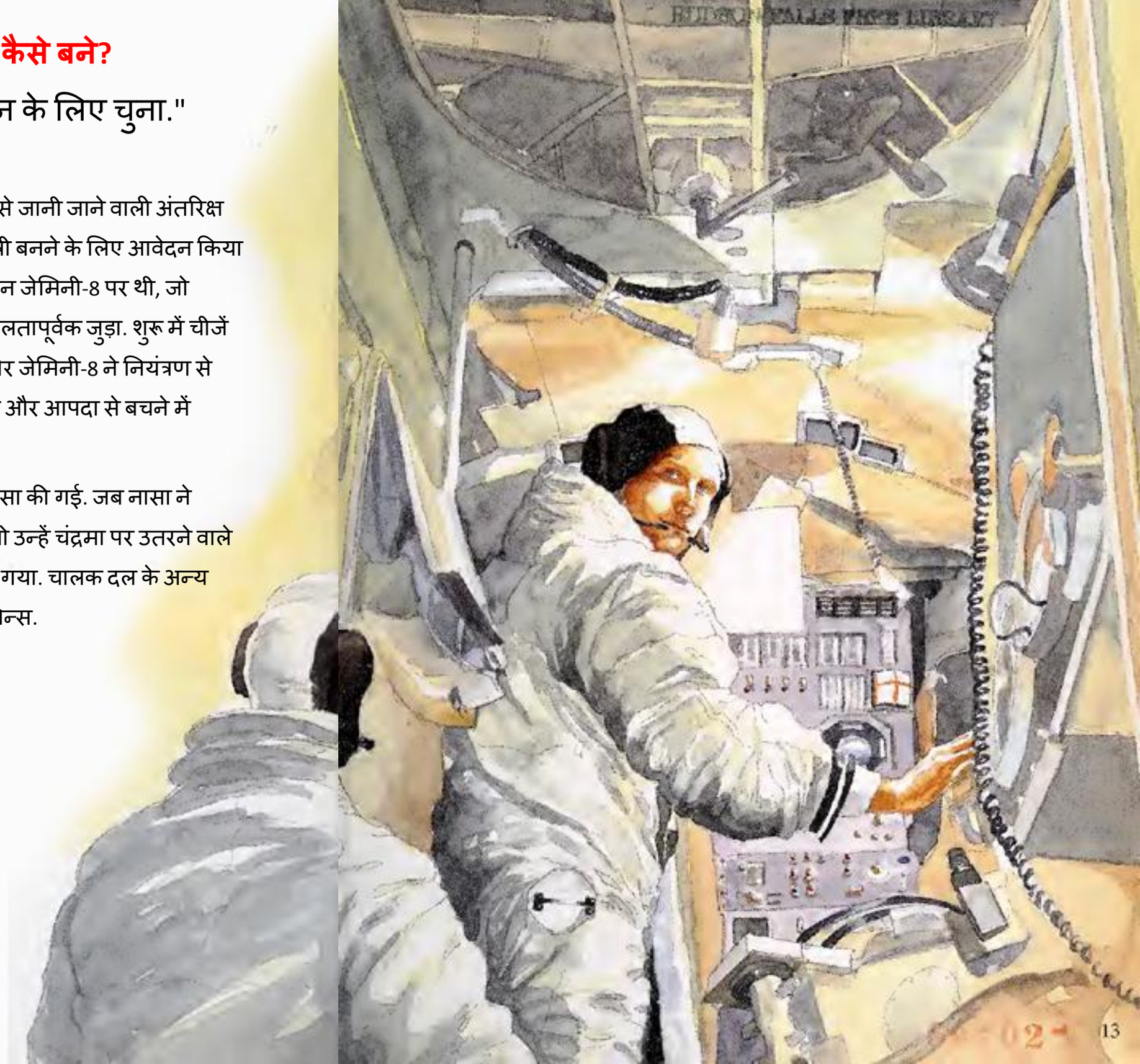

आप चंद्रमा पर कैसे पहुंचे?

"हमने सैटर्न-5 अंतरिक्ष रॉकेट में यात्रा की."

16, 1969 जुलाई को आर्मस्ट्रांग, एल्ड्रिन और कॉलिन्स जल्दी उठे और नाश्ते में उन्होंने स्टीक और अंडे खाए. फिर उन्होंने अपने स्पेस सूट पहने और फ्लोरिडा के केप केनेडी के पास गए. वहां लॉन्च पैड पर विशाल सैटर्न-5 रॉकेट खड़ा था, जो उन्हें अंतरिक्ष में तेज़ी से दागेगा. अपोलो-11 अंतरिक्ष यान, सैटर्न-5 रॉकेट के शीर्ष पर था.

सुबह 6:52 बजे, आर्मस्ट्रांग ने अपोलो-11 में प्रवेश किया, उसके बाद एल्ड्रिन और कॉलिन्स घुसे. मिशन नियंत्रण ने उल्टी गिनती शुरू की. "बारह, ग्यारह, दस, नौ ..." सैटर्न-5 के विशाल इंजन में आग लगाई गई."... छह, पांच, चार, तीन, दो, एक, शून्य, सभी इंजन तैयार थे." जमीन हिलने लगी और एक तेज़ गर्जना के साथ, सैटर्न-5 हवा में विस्फोट के साथ ऊपर उठा. उस समय सुबह के 9:32 बजे थे. "लिफ्ट! अपोलो-11 लिफ्ट-ऑफ (ऊपर उठो)."

ऊपर उठने के कुछ ही मिनटों के भीतर, रॉकेट का पहले और दूसरे चरण के इंजन निकलकर कहीं दूर जा गिरे. 9:44 बजे, तीसरे चरण के इंजनों ने फायर किया, और अंतरिक्ष यान को पृथ्वी के चारों ओर कक्षा में भेजा. लगभग ढाई घंटे बाद, उन्होंने फिर से फायर किया, जिससे अपोलो-11 की गति बढ़कर 24,000 मील प्रति घंटे की हो गई. अब अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा की ओर अग्रसर थे!

आपने चंद्रमा पर कब कदम रखा?

"20,1969 जुलाई को, ठीक 10:56 बजे."

अंतरिक्ष से यात्रा करने के तीन दिनों के बाद, अपोलो-11 चंद्रमा के चारों ओर की कक्षा में चला गया. अगले दिन, आर्मस्ट्रांग और एल्ड्रिन ने अपना स्पेस सूट पहना और लूनर (चंद्र) मॉड्यूल, ईगल में रेंगकर अंदर गए. दोपहर 1:46 बजे, ईगल ने चंद्रमा की सतह पर उतरना शुरू किया. सब कुछ सही रहा और ईगल बेहतरीन तरीके से "सी ऑफ़ ट्रैंक्विलिटी" में उतरा. पृथ्वी पर भेजे गए पहले शब्द थे "ह्यूस्टन, हम ट्रैंक्विलिटी बेस पर हैं. ईगल उतर गया है."

फिर आर्मस्ट्रांग और एल्ड्रिन ने खाना खाया. उसके बाद दोनों ने अपने हेलमेट, दस्ताने और जीवन-समर्थन प्रणाली पहनी. चंद्रमा पर कोई हवा या पानी नहीं है, और तापमान ठंड से लेकर 120° डिग्री सेल्सियस (248° F) तक होता है. उनके बैकपैक में ऑक्सीजन की सप्लाई, तापमान नियंत्रण यंत्र और दो-तरफ़ा रेडियो थे. इनके बिना, वो जीवित नहीं रहते. अंत में, उन्होंने ईगल का "हैच" ढक्कन खोला और नील बाहर की सीढ़ी से नीचे उतरने लगा.

आपने चंद्रमा पर क्या किया?

"हमने मून-रॉक (चन्द्रमा-पत्थर) के नमूने एकत्र किए."

जल्द ही, नील के साथ में बज़ एल्ड्रिन भी मिल गया. उनके अंतरिक्ष सूट भारी थे, लेकिन चन्द्रमा पर गुरुत्वाकर्षण बहुत कम था; इसलिए वे आसानी से घूमने सकते थे.

चंद्रमा की सतह पाउडर जैसी थी लेकिन दृढ़ थी.

दोनों आदमियों ने एक कैमरा फिट किया और अपना काम शुरू किया. कुछ ही घंटों में उनकी सप्लाई ख़त्म हो जाएगी. उन्होंने मून-रॉक (चंद्रमा-पत्थर) और धूल के नमूने एकत्र किए, और उन्होंने वैज्ञानिक प्रयोगों के उपकरण स्थापित किए. उनसे वैज्ञानिक, पृथ्वी और चंद्रमा के बीच की दूरी को अधिक सटीक रूप से माप पाते और उन्हें चंद्रमा की सतह की बेहतर तस्वीरें मिल पातीं. आर्मस्ट्रांग और एल्ड्रिन ने वहां एक अमेरिकी झंडा भी गाढ़ा. क्योंकि चंद्रमा पर कोई हवा नहीं थी इसलिए उन्होंने झंडे को एक तार की मदद से सख्त बनाया. उन्हें अमरीकी राष्ट्रपति का टेलीफोन भी मिला!

फिर अंतरिक्ष यात्री ईगल में लौट आए. वापिस आकर उन्हें यह पता चला कि इंजन स्टार्ट करने वाला स्विच टूट गया था. यदि वे इसे ठीक नहीं कर पाते तो वे वहीँ पर फंस जाते. पर अपनी अक्ल लगाकर उन्होंने उस स्विच को एक पेन की मदद से बदला! फिर इंजन ने फायर किया, और मॉड्यूल के ऊपरी आधे भाग ने ईगल के निचले आधे हिस्से को छोड़ दिया.

आप कितने समय तक अंतरिक्ष में रहे?

"हम आठ दिनों तक वहाँ रहे."

चंद्रमा छोड़ने के तीन घंटे बाद, ईगल इंतज़ार कर रहे कमांड मॉड्यूल - कोलंबिया तक पहुंचा, जहाँ, माइकल कोलिन्स के साथ अंतरिक्ष यात्री दुबारा मिले. ईगल को अंतरिक्ष में भेजा गया था जिससे वो चंद्रमा की सतह पर दुर्घटनाग्रस्त हो. फिर उन्होंने पृथ्वी पर अपनी वापसी यात्रा शुरू की. जब वे पृथ्वी के पास पहुंचे, तो उन्हें सर्विस मॉड्यूल को भी फेंक दिया.

24 जुलाई को, पृथ्वी छोड़ने के आठ दिन बाद, कोलंबिया के पैराशूट खुले और वो प्रशांत महासागर में जाकर गिरा. वहां पर मौज़ूद विशेष सुरक्षा सूट पहने गोताखोरों ने हैच (ढक्कन) खोला, और वे अंतरिक्ष यात्रियों को एक हेलीकॉप्टर द्वारा बचाव जहाज में ले गए. चंद्रमा की पहली यात्रा सफल रही.

वैज्ञानिकों को डर था कि कहीं अंतरिक्ष यात्री अपने साथ कुछ खतरनाक और अज्ञात "चंद्रमा-कीटाणुओं," वापस न लाएं हों, जो पृथ्वी पर बीमारियां फैलायें. इसलिए तीनों अंतरिक्ष यात्रियों को ह्यूस्टन में एक प्रयोगशाला के अंदर अगले 18 दिन "क्वारंटाइन" में बिताने पड़े. वो समय उन्होंने नासा के लोगों के साथ अपनी उड़ान के अनुभवों पर चर्चा करते हुए बिताया.

जब डॉक्टरों को विश्वास हो गया कि उनके साथ कोई अजीब रोगाणु नहीं थे, फिर अंतरिक्ष यात्रियों को दुनिया के लोगों से मिलने और अपने परिवारों के पास वापस जाने की अनुमति दी गई.

जब आप पृथ्वी पर वापस आए तब क्या हुआ?

"वो बहुत आश्चर्यजनक था!
हमारे साथ नायकों की तरह व्यवहार किया गया."

मून मिशन ने आर्मस्ट्रांग, एल्ड्रिन और कोलिन्स को पूरे जगत में प्रसिद्ध बना दिया. हर कोई उन्हें देखना और उनके अनुभवों को सुनना चाहता था.

13 अगस्त को, तीनों अंतरिक्ष यात्री और उनकी पत्नियाँ एक दिन में तीन अमेरिकी शहरों में घूमे. वे न्यूयॉर्क से शुरू करके फिर शिकागो और लॉस एंजिल्स गए. उन्हें अमेरिकी नागरिकों के सर्वोच्च पुरस्कार - राष्ट्रपति पदक से भी सम्मानित किया गया.

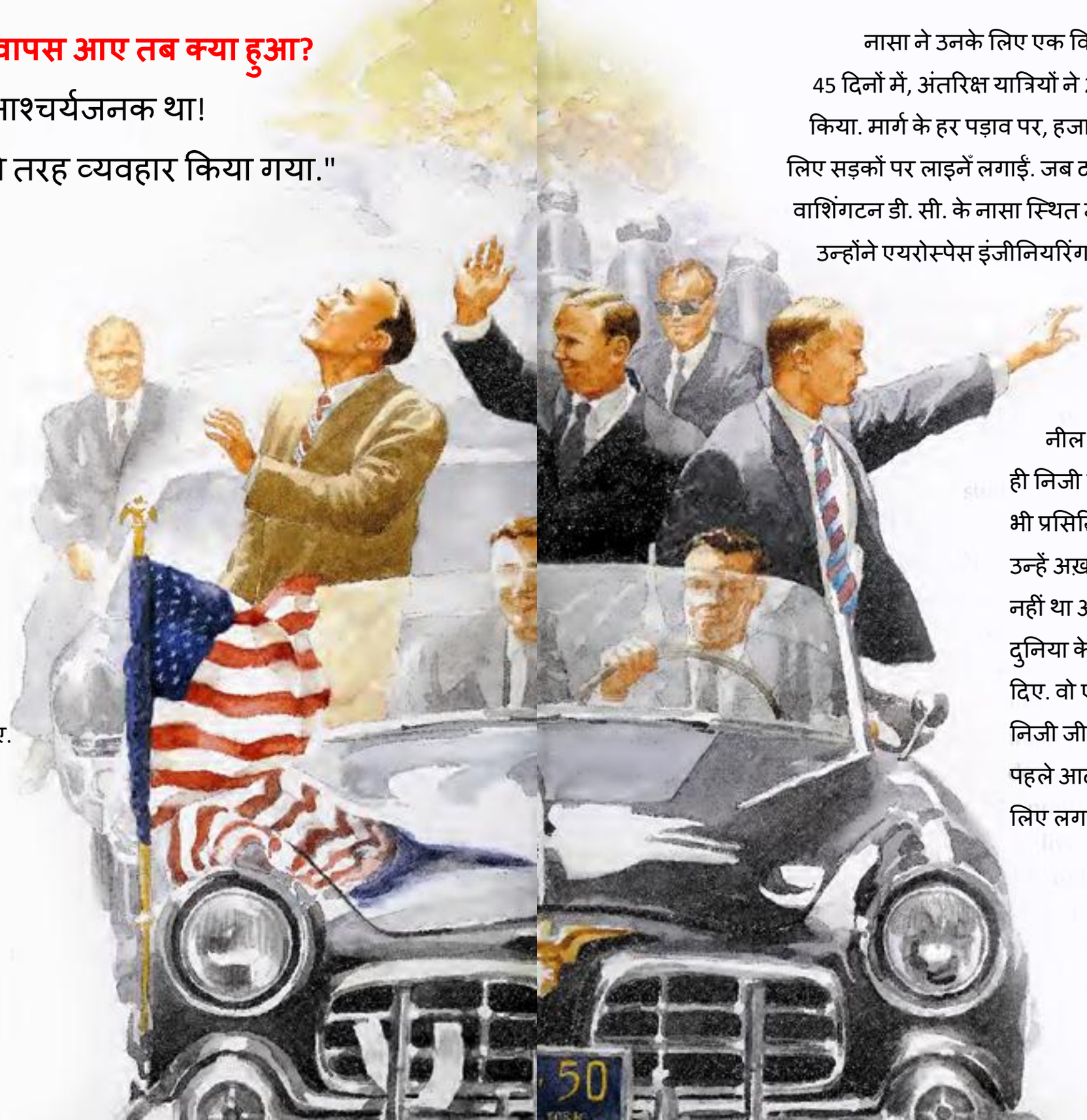

नासा ने उनके लिए एक विश्व दौरे का आयोजन किया. 45 दिनों में, अंतरिक्ष यात्रियों ने 24 देशों के 27 शहरों का दौरा किया. मार्ग के हर पड़ाव पर, हजारों लोगों ने उनके स्वागत के लिए सड़कों पर लाइनें लगाईं. जब दौरा समाप्त हुआ, तो नील ने वाशिंगटन डी. सी. के नासा स्थित मुख्यालय में नौकरी कर ली. उन्होंने एयरोस्पेस इंजीनियरिंग का अध्ययन भी जारी रखा.

नील आर्मस्ट्रांग हमेशा एक बहुत ही निजी व्यक्ति रहे और उन्होंने कभी भी प्रसिद्धि की ओर ध्यान नहीं दिया. उन्हें अख़बारों में इंटरव्यू देना पसंद नहीं था और उन्होंने विज्ञापन की दुनिया के अधिकांश प्रस्ताव ठुकरा दिए. वो एक आम इंसान जैसे अपना निजी जीवन जीना चाहते थे. चंद्रमा पर पहले आदमी होने के नाते यह उनके लिए लगभग असंभव हुआ.

क्या आप फिर कभी अंतरिक्ष में गए?

"नहीं, लेकिन मैं अक्सर वहां दुबारा जाना चाहता था."

1971 में, नील ने नासा से इस्तीफा दे दिया और फिर उन्होंने सिनसिनाटी यूनिवर्सिटी में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग सिखाई. पृथ्वी पर अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे किया जाए? उन्होंने उसका भी अध्ययन किया. 1976 में, वो उस टीम के प्रमुख थे जो ओपन-हार्ट सर्जरी में उपयोग के लिए एक पम्प विकसित कर रही थी. यह पम्प अपोलो अंतरिक्ष सूट में इस्तेमाल किए गए पम्प जैसा था.

नील फिर कभी अंतरिक्ष में नहीं गए. उन्होंने ओहियो में एक फार्म खरीदा और वहां अपने परिवार के साथ एक शांत जीवन व्यतीत किया. वो शायद ही कभी सार्वजनिक रूप से दिखाई दिए या उन्होंने कोई साक्षात्कार दिया. 1979 में, उन्होंने विश्वविद्यालय में अपने शिक्षण कार्य से इस्तीफा दे दिया. इस बीच, छह और चंद्रमा मिशनों के साथ अपोलो कार्यक्रम जारी रहा. अंतरिक्ष अन्वेषण में अगला, बड़ा कदम 1970 के दशक में सोवियत और अमेरिकी अंतरिक्ष स्टेशनों के प्रक्षेपण के साथ आया.

नील को अभी भी अंतरिक्ष में दिलचस्पी थी और उन्होंने इक्कीसवीं सदी में अंतरिक्ष की खोज करने के लिए वाले एक कार्यक्रम के लिए काम किया. हालांकि वो योजना कभी पूरी नहीं हुई थी. 28 जनवरी, 1986 को, अंतरिक्ष यान **चैलेंजर** लिफ्टऑफ के कुछ सेकंड बाद ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया. नील उस समिति के उप प्रमुख थे जिसने उस आपदा के कारण का पता लगाया.

जुलाई 1994 में पूरे अमेरिका में लोगों ने पहली मून-लैंडिंग की पच्चीसवीं वर्षगांठ मनाई. नील आर्मस्ट्रांग ने किसी भी आधिकारिक कार्यक्रम में भाग नहीं लिया. वो एक स्थानीय एयर-शो में ज़रूर दिखाई दिए. जब नील ने एक प्लेन को आसमान में देखा, तो किसी ने उन्हें कहते हुए सुना, "काश मैं वहां होता!"

सैटर्न-5

विशाल सैटर्न-5 रॉकेट वो रॉकेट था जिसने अपोलो-11 के अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में पहुंचाया.

सैटर्न-5 को तीन चरणों में बनाया गया था, जिसमें शीर्ष पर अपोलो-11 अंतरिक्ष यान था. रॉकेट 68.7 फीट लंबा था और इसका वजन लगभग 3,200 टन था. वो तब तक बना सबसे बड़ा रॉकेट था.

लिफ्टऑफ के बाद, पहले-चरण के इंजनों ने ढाई मिनट तक फायर किया, जिससे रॉकेट लगभग 37 मील की ऊंचाई तक उठा. तब पहले चरण के रॉकेट अटलांटिक महासागर में गिर गए.

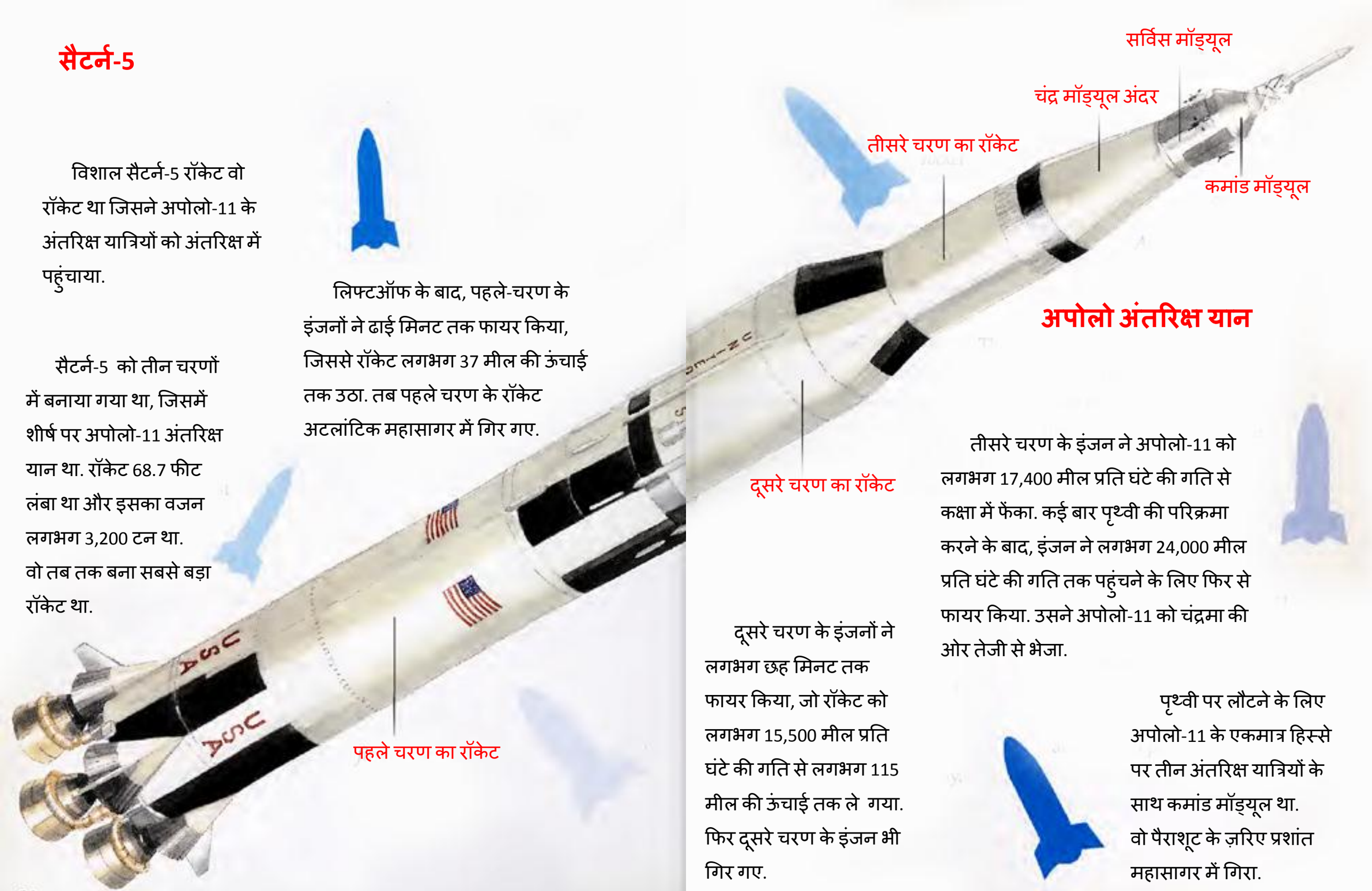

दूसरे चरण के इंजनों ने लगभग छह मिनट तक फायर किया, जो रॉकेट को लगभग 15,500 मील प्रति घंटे की गति से लगभग 115 मील की ऊंचाई तक ले गया. फिर दूसरे चरण के इंजन भी गिर गए.

तीसरे चरण के इंजन ने अपोलो-11 को लगभग 17,400 मील प्रति घंटे की गति से कक्षा में फेंका. कई बार पृथ्वी की परिक्रमा करने के बाद, इंजन ने लगभग 24,000 मील प्रति घंटे की गति तक पहुंचने के लिए फिर से फायर किया. उसने अपोलो-11 को चंद्रमा की ओर तेजी से भेजा.

पृथ्वी पर लौटने के लिए अपोलो-11 के एकमात्र हिस्से पर तीन अंतरिक्ष यात्रियों के साथ कमांड मॉड्यूल था. वो पैराशूट के ज़रिए प्रशांत महासागर में गिरा.

कुछ महत्वपूर्ण तिथियां

1930 नील आर्मस्ट्रांग का जन्म 5 अगस्त को हुआ.

1936 नील ने एक हवाई-जहाज में अपनी पहली सवारी का आनंद लिया. वो पहले से ही उड़ान से मोहित थे.

1946 अपने सोलहवें जन्मदिन पर, नील ने अपना ड्राइविंग टेस्ट पास करके पायलट का लाइसेंस प्राप्त किया.

1947 नील ने हाई स्कूल पास किया. उसे एक नौसेना छात्रवृत्ति मिली और वो एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग पढ़ने के लिए पर्ड्यू विश्वविद्यालय गया.

1949 नौसेना को कोरियाई युद्ध में लड़ने के लिए नील को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता पड़ी.

1950-1953 अमेरिका और 19 अन्य राष्ट्रों के बीच सुदूर पूर्व में कोरियाई युद्ध लड़ा गया. नील को फाइटर पायलट के रूप में कोरिया भेजा गया जहाँ उसे उत्कृष्ट सेवा के लिए तीन एयर मेडल से सम्मानित किया गया.

1952 नील अमरीका में लौटे और उन्होंने पर्ड्यू यूनिवर्सिटी में पढ़ाई की.

1955 नील ने पर्ड्यू यूनिवर्सिटी से विज्ञान स्नातक की डिग्री प्राप्त की. उसने एक शोध पायलट के रूप में काम शुरू किया.

1956 28 जनवरी को, नील ने शियरडॉन से शादी की.

1957 सोवियत उपग्रह स्पुतनिक-1 के प्रक्षेपण के साथ, रूस और अमरीका के बीच "स्पेस रेस" शुरू हुई.

1961 सोवियत कॉस्मोनॉट, यूरी गगारिन, अंतरिक्ष में जाने वाले पहले व्यक्ति बने.

1962 नील को एक अंतरिक्ष यात्री चुना गया. वो अपने परिवार के साथ टेक्सास के ह्यूस्टन गया. उसने अपना समय प्रशिक्षण और अंतरिक्ष परियोजनाओं पर काम करने में बिताया.

1966 नील को जैमिनी-8 अंतरिक्ष मिशन का कमांडर बनाया गया. वो अंतरिक्ष यान, अंतरिक्ष में किसी अन्य रॉकेट के साथ लिंक करने वाला पहला यान था. इसे "डॉकिंग" कहा जाता है.

1969 अपोलो-11, 16 जुलाई को लॉन्च किया गया. 20 जुलाई को, नील चंद्रमा पर पैर रखने वाले पहले व्यक्ति थे. उसके बाद बज़ एल्ड्रिन उतरे.

1971 नील नासा छोड़कर सिनसिनाटी यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर बने. उन्होंने ओहियो के पास एक फार्म खरीदा.

1978 नील को कांग्रेस का अंतरिक्ष पदक मिला.

1979-1982 नील ने सिनसिनाटी यूनिवर्सिटी छोड़ी. उन्होंने विभिन्न कंपनियों के बोर्ड में कार्य किया.

1984 नील ने अंतरिक्ष पर राष्ट्रीय आयोग (NCOS) के लिए काम किया.

1986 अंतरिक्ष यान चैलेंजर ने लिफ्टऑफ में कुछ सेकंड बाद विस्फोट हुआ जिससे सभी सात अंतरिक्ष यात्रियों की मौत हो गई. नील कारण पता लगाने वाली जांच टीम के सदस्य थे.

1994 में पूरे अमरीका में मून-लैंडिंग के 25 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में जश्न मनाया गया. पर नील ने उसमें भाग नहीं लिया.

1998 अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री जॉन ग्लेन शटल पर सवार होकर फिर से अंतरिक्ष में गए. 77 वर्ष की आयु में, वो अंतरिक्ष में जाने वाले सबसे बुजुर्ग व्यक्ति थे. उस मिशन का उद्देश्य अंतरिक्ष का बुढ़ापे पर प्रभाव की जाँच करना था.

2012 25 अगस्त को नील आर्मस्ट्रांग का देहांत हुआ.